कार्यालय – प्राचार्य

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.)

Email Id – principalgovtskycollege@rediffmail.com

क्रमांक – /भौ.भ्रमण/2020 गुण्डरदेही, दिनांक – 21-01-2020

// आदेश //

महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र् 2019 – 20 में अध्ययनरत् एम.ए.भूगोल पूर्व एवं अंतिम के छात्र – छात्राओं को भौगोलिक भ्रमण कराया जाना है। जिसके लिए नीचे लिखे अनुसार समिति गठित की जाती है। समिति अपनी संरक्षण में छात्र – छात्राओं को सुरक्षा पूर्वक भौगोलिक भ्रमण करने हेतु आवश्यक तैयारी कर प्राचार्य को अवगत करावें।

01. डॉ.(श्रीमती) निगार अहमद, सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी – संयोजक
02. डॉ.तृप्ति राजपूत, अतिथि व्याख्याता, भूगोल – सदस्य
03. श्री थान सिंह साहू, सहा.प्रा. ज.भा.प्र.समिति – सदस्य

प्राचार्य
PRINCIPAL
Govt. Shahid Koushal Yadav College
Gunderdehi, Dist. - Balod (C.G.)

क्रमांक – 644/भौ.भ्रमण/2020 गुण्डरदेही, दिनांक – 21-01-2020

प्रतिलिपि :–

01. डॉ.(श्रीमती) निगार अहमद, सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी, शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.) को सूचनार्थ एवं पालनार्थ।
02. डॉ.तृप्ति राजपूत, अतिथि व्याख्याता, भूगोल, शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.) को सूचनार्थ।
03. श्री थान सिंह साहू, सहा.प्रा. वाणिज्य, शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय गुण्डरदेही, जिला – बालोद (छ.ग.) को सूचनार्थ।

प्राचार्य
PRINCIPAL
Govt. Shahid Koushal Yadav College
Gunderdehi, Dist. - Balod (C.G.)

Scanned with CamScanner

प्रति,

प्राचार्य

शा. शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला - बालोद (छ.ग.)

द्वारा - विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग।

विषय - भूगोल विभाग के छात्र-छात्राओं के भौगोलिक भ्रमण में जाने के संबंध में

महोदय,

विषयानुसार निवेदन है कि इस महाविद्यालय के भूगोल विभाग के समस्त छात्र-छात्रा भौगोलिक भ्रमण में दिनांक 23/01/2020 को पुरखौती मुक्तांगन रायपुर जाना चाहते हैं। अतः उक्त तिथि को भौगोलिक भ्रमण में जाने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

दिनांक
20/01/2020

भवदीय

(1) टोमेश्वरी एम.ए. भूगोल I Se
चतुर्थ सेमेस्टर

(2) प्रगति —/ Sahu

(3) क्षमेश्वरी —/— Jhameshwari

(4) डामिन — Damin

(5) डोमेश्वर कुमार (DK) Chureu

[illegible]	पीतेश्वर	एम.ए भूगोल चतुर्थ सेमेस्टर २	[illegible]
7	माधव सिंह	,,	[illegible]
8	अमरदास	,,	Amardas
9	वेदप्रकाश	एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर	[illegible]
10	चन्दन	,,	[illegible]
11	ज्ञानेश्वर	,,	ज्ञानेश्वर
12	इन्द्राणी	,,	[illegible]
13	ओमकुमारी	,,	Om Kumari
14	पूनम	,,	Punam
15	टिमन	,,	Timan
16	खेमलता	,,	खेमलता
17	अमित	,,	[illegible]
18	चन्द्रशेखर	,,	[illegible]
19	गोकरण	,,	[illegible] (गोकरण प्रसाद)

Scanned with CamScanner

प्रति,

प्राचार्य

शा० शहीद कौशल महाविद्यालय गुण्डरदेही,

जिला - बालोद (छ०ग०)

विषय :- भूगोल विभाग के छात्र-छात्राओं को भौगोलिक भ्रमण में ले जाने के संबंध में।

संदर्भ :- छात्र-छात्राओं से प्राप्त आवेदन दिनांक - 20/01/2020

महोदय

विषयानुसार निवेदन है, कि इस महा० के भूगोल विभाग के छात्र-छात्राएँ भौगोलिक भ्रमण में दिनांक 23/01/2020 को पुरखौती मुक्तांगन रायपुर जाना चाहते हैं।

अतः उक्त तिथि को भौगोलिक भ्रमण में जाने हेतु अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

भवदीय

Tripti Rajput
23/01/2020

डॉ. तृप्ति राजपूत

अतिथि व्याख्याता (भूगोल)

शा० शहीद कौशल यादव

महा० गुण्डरदेही जिला - बालोद

To,

The Principal
Govt S.K.Y College
Gunderdehi

Sub: Regarding educational tour for P.G students

R/Madam,

With reference to your letter no 644/dt 21.1.20 I have been appointed as coordinator of an educational tour for the students of Post Graduate students of Geography department. This tour for Purkhaoti Muktangan Raipur will start on 23.1.20 from college campus. There are nineteen students along with two professors Dr Tripti Rajput and Shri Than Singh. And the tour will end at the college campus only.

Thanking you

Yours Sincerely

22.1.20

Enclosure:
List of students

[signature]

Dr Nigar Ahmed
Asst Prof
English

Scanned with CamScanner

शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय
गुण्डरदेही, जिला–बालोद (छ.ग.)

भूगोल विभाग

(भौगोलिक भ्रमण)

सत्र : 2019–2020

नाम–अमर दास
कक्षा–एम.ए. भूगोल (चतुर्थ सेमेस्टर)
रोल नं.–10418053003

Typing Zone, Arjunda , Pro-Hemant Dewangan, Mo.No.-8718001077

Scanned with CamScanner

भौगोलिक भ्रमण करते हुए छात्र छात्राएं

Scanned with CamScanner

प्रस्तावनाः–

भौगोलिक भ्रमण भूगोल विभाग के सभी छात्र–छात्राओं के लिए किसी स्थान की प्राकृतिक संरचना व पर्यावरण (वातावरण) व प्राचीन रीति–रिवाजों को पहचानने का माध्यम भौगोलिक भ्रमण है। छात्र–छात्राओं के भूगोल से संबंधित अध्ययन करना होता है। इसलिए भौगोलिक स्थान की आवश्यकता होती है।

इस वर्ष 2019–2020 दिन गुरूवार दिनाँक 23–01–2020 को प्रातः 08:30 बजे, शासकीय शहीद कौशल यादव महाविद्यालय, गुण्डरदेही, जिला–बालोद के सभी एम.ए.

भूगोल (द्वितीय व चतुर्थ सेमेस्टर) के छात्र–छात्रा व अतिथि व्याख्याता, भूगोल विभाग डॉ. तृप्ति राजपूत व डॉ. निगार अहमद (सहा.प्रा. अंग्रेजी) एवं अतिथि व्याख्याता श्री थानसिंह साहू (सहा.प्रा. वाणिज्य), अतिथि व्याख्याता कु. नेहा कुंजाम (सहा.प्रा. सूक्ष्म विज्ञान) के मार्गदर्शन में भौगोलिक भ्रमण के लिए महाविद्यालय से लगभग 84 कि.मी. दूर **पुरखौती मुक्तांगन (नया रायपुर)** ले जाया गया। जिसमें छत्तीसगढ़ की प्राचीन संस्कृति, परम्परा को कैसे बनाए रखना है उनकी अच्छी जानकारी भौगोलिक भ्रमण के माध्यम से हुआ है। यह पुरखौती मुक्तांगन संग्रहालय छत्तीसगढ़ की वैविध्यपूर्ण संस्कृति का जीवंत केंद्र है।

छत्तीसगढ़ के नवा रायपुर, अटल नगर में स्थित पुरखौती मुक्तांगन महामहिम राष्ट्रपति भारत सरकार डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तथा राज्यपाल महामहिम श्री के.एम. सेठ की अध्यक्षता द्वारा 07 नवंबर 2006, दिन – मंगलवार को उद्घाटित पुरखौती

Scanned with CamScanner

मुक्तांगन छत्तीसगढ़ की कला–संस्कृति की एक झलक एक ही स्थान में कला तीर्थ के रूप में प्रदर्शित किया गया है। राजधानी रायपुर के राष्ट्रीय राजमार्ग कमांक 43 में रायपुर–अभनपुर मार्ग में ग्राम–उपरवारा के पास लगभग 200 एकड़ में इसे बनाया गया है।

उद्देश्यः–

हमारे भौगोलिक भ्रमण का मूल उद्देश्य सिर्फ भ्रमण करने का ही नहीं था अपितु हमारा उद्देश्य यह था कि हम अपने छत्तीसगढ़ की इस संस्कृति का सम्मान करें। हम ऐसे विशाल क्षेत्र से अवगत हों, जो हमारी प्राचीन रीति–रिवाज एवं परम्परा को बनाए रखे हैं, जो आधुनिकीकरण के युग में खोते जा रहे हैं। ताकि हम अपनी कला एवं अपनी स्थलाकृतियों को संजोकर रख सकें।

पुरखौती मुक्तांगन की झलक

पुरखौति मुक्तांगन में प्रथम चरण में वनवासी के आखेट दृश्य एक लोक–नृत्य, लोक–संगीत का मूर्ति शिल्प, पारंपरिक कला को जीवन्त करने का अनूठा प्रयास किया गया है। यहाँ पर बड़ी ही बारीकी के साथ बस्तर की पारंपरिक दृश्यों को दिखाया गया है। बस्तर की जीवन–शैली वहां की पूजा पद्धति, वहां का घर, वहां का त्यौहार, बस्तर का

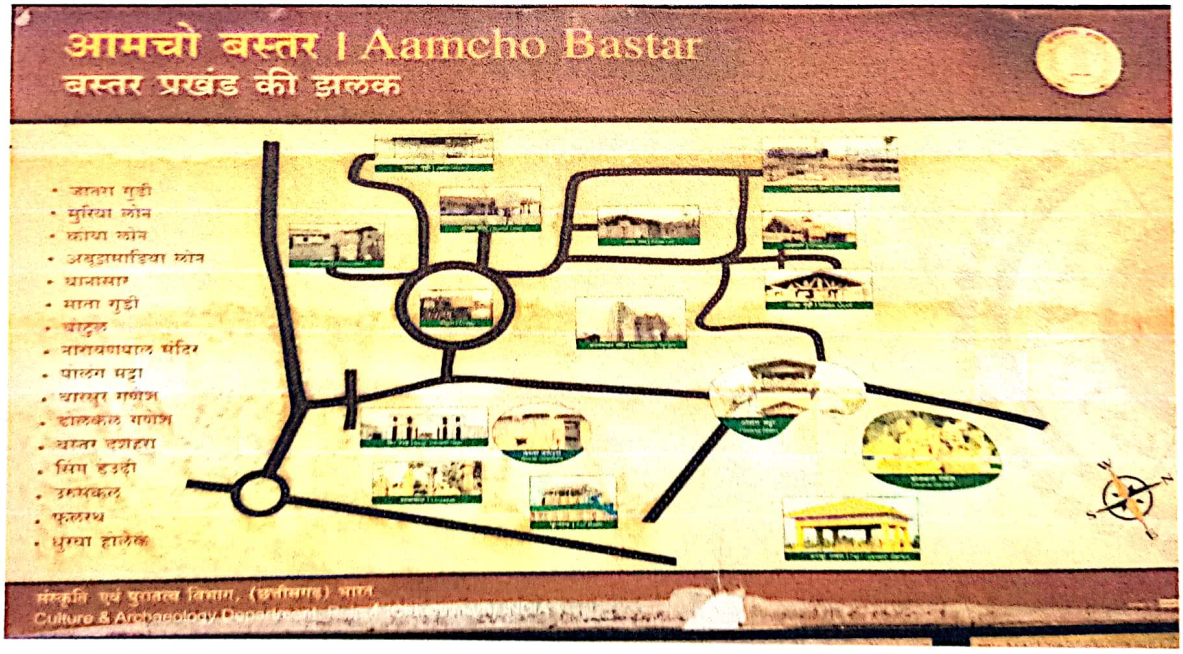

जलप्रपात, देवी –देवताओं का बारीकी से चित्रांकन किया गया है। छत्तीसगढ़ के कुछ प्राचीन मंदिर को वहां पर हुबहू बनाया गया है। साथ ही सीता बेंगरा, लक्ष्मण बेंगरा गुफा,

Scanned with CamScanner

बुद्ध मंदिर, ढोलकन की पर्वत पर विराजे गणेश प्रतिमा, बारसूर के जुड़वा गणेश प्रतिमा का सुन्दर चित्रांकन किया गया है। चारों तरफ पेड़–पौधे व गार्डन का निर्माण किया गया ह। यहां पर सबसे सुन्दर स्थान "आमचो गाँव" है। जहां जाने पर लगता है कि आप किसी पुरानी गाँव में पहुंच गए हो गाँव मे होने का अहसास दिलाती है। यहाँ पुरखौती मुक्तांगन अपनी पुरानी संस्कृति को भावी पीढ़ी तक पहुंचाने का काम कर रही है।

जैसे ही हमने प्रवेश द्वार से अंदर की ओर प्रवेश किए तो हमारे सामने छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध विद्वान की प्रेरणाश्रोत मूर्तियाँ दिखीं। इसमें मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के वे सम्माननीय वरिष्ठजन जिन्होंने अपने क्षेत्र में विशेष उपलब्धि हासिल की हैं:–

1. शहीद वीर नारायण सिंह
2. मिनी माता
3. पं. सुंदर लाल शर्मा
4. माधव राव सप्रे
5. बैरीस्टर छेदी लाल
6. पं. रविशंकर शुक्ला
7. डॉ. प्यारे लाल
8. खूबचंद बघेल

आगे बढ़ने पर एक आदिवासी संस्कृति की ढोलक के साथ स्वागत करते हुए मूर्ति मिली

और थोड़े ही दूर में पुरखौती मुक्तांगन की लोकार्पण किया हुआ चबूतरा मिला, जिसके समीप वन भैंसा एवं जंगली सुअर की कुछ मूर्तियाँ देखने को मिलीं। आगे बढ़ते ही बस्तर की संस्कृतियों की झलक हम सभी छात्र–छात्राओं ने देखीं। जिसमें मुख्य रूप से जातरा गुड़ी, मुरिया लोन, कोया लोन, अबुझमाड़िया क्षेत्र, घानासार, माता गुड़ी, घोटुल, नारायणपाल मंदिर, पोलंग मट्टा, बारसूर गणेश, बस्तर दशहरा, सिंग डेउढ़ी, उरूसकल, फूलरथ, धुरवा होलेक को छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, (छत्तीसगढ़) भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ की आभूंषणों को दीवारों में अलंकृत किया गया है व आदिवासियों की संस्कृति की चित्रकला प्रदर्शित की गई है।

Scanned with CamScanner

1. जतरा (जातरा, जात्रा) गुड़ी, एक जनजातीय अनुष्ठानः–

बस्तर अंचल में विविध जनजातीय समाजों के मध्य अपने–अपने लोक विश्वास और धार्मिक मान्यताओं में सामूहिक पूजा–अर्जन करने की परंपराएं हैं, जिनमें जतरा या जातरा का विशेष महत्व है।

आमचो बस्तर में ऐसे ही एक जतरा या जातरा अनुष्ठान को प्रादर्श रूप में विकसित करने का प्रयास किया गया है जिसमें देवी–देवताओं की मूर्तियों, जतरा या जातरा का जुलूस तथा उसकी गतिविधियों के विविध दृश्य, देवी–देवताओं को अर्पित की जाने वाली पशु–मूर्तियां, चढ़ावे तथा अनुष्ठान से संबंधित अन्य वस्तुओं

को प्रदर्शित किया गया है। जतरा या जातरा के प्रादर्श में लोहे से बने तिरसुल (त्रिशूल), काटा–सिकरा, भाला, डोली, पलकी, पड़ेहार, सिरहा, पुजारी, आँगादेव, आँगादेव उठाने वाले व्यक्ति, आँगादेव संभालने वाला व्यकित, नाचते हुए सिरहा, मोहरी, तुड़बुड़ी, नगाड़ा–मोहरी बजाने वाले 3 व्यक्ति, झिटकू, डुमा देव, लाट पकड़ने वाला, डँगई लाट, तरास, तरास पकड़ने वाला, फरसा पकड़ने वाला, मुर्गी खरीदने वाली महिला, बकरा–विक्रेता, बकरा खरीदने वाला, घंटा वादक, तोड़ी फूंकने वाला, मेढ़ा (भेड़), मेढ़ा पकड़ने वाला, मंदिरा पकड़ने वाला, फूल गूंथने वाली, माई का दर्शन करने जाती महिला, थाली में पूजा–सामग्री ले जाती महिला आदि की मूर्तियाँ प्रदर्शित हैं। इसके अतिरिक्त आँगादेव, माता की डोली, अनुष्ठानिक वाद्य यंत्र भी इस प्रादर्श खण्ड में प्रदर्शित किए गए हैं। आमचो बस्तर के इस प्रादर्श में बस्तर अंचल के विभिन्न जनजातीय समाजों में प्रचलित अनुष्ठानिक परम्पराओं की एक झलक दिखाने का प्रयास किया गया है।

Scanned with CamScanner

2. मुरिया लोनः–

मुख्यतः कृषि से आजीविका प्राप्त करने वाली मुरिया अपनी कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए विशेष रूप से जानी जाती है। पारंपरिक मुरिया–आवास (मुरिया–लोन) तीन खण्डों में विभक्त किया जा सकता है। ईंट, मिट्टी, या बाँस–झाड़ियों से निर्मित दीवार, लकड़ी के खंभों और छाजन–संरचना, जिस पर कवेलू का छाजन किया होता है, मुरिया–आवास के प्रमुख विवरण में सम्मिलित हैं। प्रमुख आवास अर्थात लोन में तीन कमरे बने हैं, जिनमें से एक कक्ष में बाड अर्थात पटाव या सिलिंग होती है, जिसे ढोलँगियों (बाँस की पतली कमचिंयों) से बनी गोलाकार किन्तु लगभग 4–5 फीट ऊँची कोठियों) में भरकर अनाज–भंडारण के लिए उपयोग किया जाता है। इस कक्ष में मुरिया भौतिक संस्कृति की घरेलू उपयोग की विविध वस्तुएँ यथा–सीन रखी गई होती हैं।

दूसरा कक्ष रसोई है तथा तीसरे कक्ष का भी बाड के रूप में उपयोग होता है, जिसमें ढुसी (धान के पुआल से बनायी गयी रस्सी से निर्मित कोठी) में धान भण्डारण किया जाता है।

मुरिया लोन में गोठान (गौठान), बकरी के रहने का सीन, सुअर रखने का स्थान तथा आँगन में परिवारजनों के बैठने के लिए एक चौपाल अन्य संरचनाएँ हैं। आवास के पीछे एक कुँआ भी निर्मित है जिसका उपयोग घर और बाड़ी की सिंचाई (पानी की आपूर्ति) हेतु किया जाता है।

Scanned with CamScanner

3. कोया लोन (मारिया आवास संकुल):–

बस्तर अंचल के दंतेवाड़ा, सुकमा, बीजापुर आदि जिलों में निवास करने वाली माड़िया जनजाति को उनके द्वारा नृत्य के अवसर पर गौर पशु के सींग से बने शिरोभूषण के उपयोग के कारण बाइसन हार्न माड़िया अर्थात गँवर सिंग माड़िया भी कहा जाता है। यह जनजाति माड़िया के नाम से भी संबोधित की जाती है। आमचो बस्तर में निर्मित पारंपरिक माड़िया–आवास जिसे स्थानीय भाषा में कोया–लोन कहा जाता है, के तीन खण्ड हैं। आवास–संकुल का पहला खंड कोया–लोन अर्थात मुख्य आवास जिसमें परिवार के सदस्य निवास करते हैं। दूसरा खंड गोड कोट्टम है, जिसे गाय–बैलों के बाड़े के रूप में उपयोग किया जाता है।

4. पोलंग मट्टा:–

जनजातिय समाज में प्रकृति के साथ परंपराओं से चले आ रहे तादाम्य के अनेक पक्ष हैं। अनेक समाजों में धार्मिक मान्यताओं से जुड़ी पुनीत वनों के संरक्षण के अनेकों उदाहरण विद्यमान हैं। पोलंग मट्टा ऐसी ही एक पर्वतीय चोटी है जो नारायणपुर के समीप स्थित है। क्षेत्रीय मान्यताओं के अनुसार पोलंग मट्टा ग्राम रक्षक देवता राव देव से संबंधित हैं जहां वे विश्राम के लिए जाते हैं। आमचो बस्तर प्रदर्शनी में पोलंग मट्टा के एक प्रतीकात्मक प्रादर्श के रूप में पर्वत टेकरी का विकास किया गया है जिसमें अपने घोड़े पर सवार राव देव की प्रतिमा स्थापित है तथा साथ ही राम देव के एक विश्राम स्थल की रचना की गई है।

Scanned with CamScanner

5. डोलकल गणेश (डोलकल स्थित गणेश प्रतिमा का प्रतिरूप):–

चतुर्भुजी आसनस्थ गणेश की यह विख्यात प्रतिमा दंतेवाड़ा जिले के फरसापाल ग्राम के सन्निकट स्थित डोलकल पहाड़ी के दुर्गम्य चोटी पर प्रस्थापित है। शैली की दुष्टि से यह लगभग 12वीं–13वीं सदी ईसवी में निर्मित है। शिवरात्रि एवं अन्य पर्वों पर स्थानीय दर्शक यहाँ गणेश जी की आराधना–उपासना करने हेतु एकत्र होते हैं। प्राचीन काल में यह स्थल गाणपत्य संप्रदाय का साधना–क्षेत्र रहा होगा। सुदूर वन–प्रान्तर के एक दुर्गम पर्वत शिखर पर स्थित इस गणेश प्रतिमा की एक समरूप प्रतिकृति आमचो बस्तर प्रदर्शनी में 12वीं–13वीं शताब्दी की मूर्तिकला से परिचय प्रदान करने के उद्देश्य से प्रदर्शित की गयी है।

6. घोटुलः–

बस्तर अंचल के कोण्डागाँव और नारायणपुर जिले मुरिया जनजाति के पारंपरिक आवास–क्षेत्र हैं। घोटुल, मुरिया जनजाति का युवा–गृह है जिसका परंपरागत रूप से गाँव के युवक और युवतियों द्वारा विवाह पूर्व निशा–विश्राम स्थल के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। मान्यता है कि घोटुल की स्थापना मुरिया (गोड़) जनजाति के आदि देवता लिंगों देव (लिंगो पेन) द्वारा की गयी थी जहाँ घोटुल के युवा सदस्य (युवक–युवतियाँ) मुरिया समाज की आर्थिक–सामाजिक–सांस्कृतिक ज्ञान–परम्पराओं का परोक्ष रूप से ज्ञानार्जन करते रहे हैं।

घोटुल ने मुरिया कलाकारों को उत्कृष्ट आश्रय दिया है जहां नृत्य – गीत – संगीत सीखने के अतिरिक्त युवक–युवतियाँ लकड़ी, पोत, कौडी तथा अन्य सामग्री के

Scanned with CamScanner

माध्यम से कलात्मक उपयोगी वस्तुओं द्वारा सृजन किया करते रहे हैं। मुरिया कलाकारों द्वारा लकड़ी पर कलात्मक अभिव्यक्ति उनकी पारंपरिक कला में एक उत्कृष्ट स्थान रखती है और यही कारण है कि आमचो बस्तर में प्रादर्श के रूप में निर्मित घोटुल को मुरिया कलाकारों द्वारा अपनी पारंपरिक काष्ठ उत्कीर्णन कला से सुसज्जित कर निर्मित किया गया है। लकड़ी के खंभों की बाड़ वाली इस संरचना में दो कमरे तथा एक बरामदा बना हुआ है तथा छत मिट्टी के कवेलू का भी है। घोटुल में युवक युवतियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सिरहाने, गेड़ी तथा वाद्य यंत्र भी यथा स्थान प्रदर्शित किए गए हैं।

7. बस्तर का दशहराः–

छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में मनाया जाने वाला दशहरा अपने विशेष स्वरूप के कारण प्रसिद्ध है। बस्तर का दशहरा दुनिया का सबसे लंबा 75 दिनों तक चलने वाला लोक पर्व माना जाता है। अपनी अनोखी संस्कृति की वजह से बस्तर वैश्विक स्तर पर हमेशा चर्चा में रहा है। इसमें दन्तेश्वरी देवी की पूजा अर्चना की जाती है। जगदलपुर के दन्तेश्वरी मंदिर में विशेष पूजा कार्यक्रम किया जाता है।

8. चित्रकोट जलप्रपातः–

पुरखौति मुक्तांगन में छत्तीसगढ़ प्रदेश में स्थित चित्रकोट जलप्रपात की झलक दिखायी गई है। इस जल चित्रकोट जलप्रपात जगदलपुर से 39 किमी दूर इन्द्रावती नदी पर यह जलप्रपात बनता है। जिसकी ऊँचाई 90 फुट है। इसके बहाव में इन्द्रधनुष का मनोरम दृश्य, आल्हादकारी है। यह बस्तर संभाग कमा सबसे प्रमुख जलप्रपात माना जाता है।

Scanned with CamScanner

पुरखौती मुक्तांगन में छत्तीसगढ़ी नृत्यों की झलक

यहाँ छतीसगढ़ की समस्त लोक–नृत्यों को एक ही जगह दिखाने का प्रयास किया गया है, जिसमें प्रमुख हैं–

1. गेड़ी नृत्य
2. बैगा नृत्य
3. राऊत नाचा
4. पंथी नृत्य
5. सुवा नृत्य
6. गौर नृत्य

महत्वः–

छत्तीसगढ़ की पुरखौती मुक्तांगन में समस्त लोकनृत्यों, संस्कृतियों एवं स्थलाकृतियों के माध्यम से हमें अपनी प्राचीन सभ्यताओं की जानकारी हुई है जिससे हम अपनी संस्कृतियों को समझने व संजोए रखने का निरंतर प्रयास जारी रखें ताकि भविष्य में हमारी छत्तीसगढ़ की संस्कृतियाँ विलुप्त न हों।

सीखः–

भौगोलिक भ्रमण के माध्यम से हम सभी भूगोल विभाग के समस्त छात्र–छात्राओं ने पुरखौति मुक्तांगन की संस्कृतियों, स्थलाकृतियों की जानकारी ली एवं साथ ही सभी परंपराओं से अवगत हुए।

निष्कर्षः–

पुरखौती मुक्तांगन भ्रमण करने के दौरान हमने अपनी बस्तर की संस्कृतियों, स्थलाकृतियों एवं विभिन्न परंपराओं को समझा। पुरखौति मुक्तांगन एक ऐसी धरोहर है जहां बस्तर की संपूर्ण संस्कृतियों की झलक एक ही जगह देखी जा सकती है, जिससे हमें ऐसा आभास हुआ कि हम सभी छात्र–छात्रा बस्तर की अंचलों में हैं। साथ ही वहाँ के विभिन्न जनजातियों की देवी–देवताओं को एवं वहां बनी मूर्तिकला को देखने को मिला। छत्तीसगढ़ की प्रमुख लोकनृत्यों की मूर्तिकला के माध्यम से हमें जानकारी हुई।

Scanned with CamScanner

नंदनवन

प्रस्तावनाः–

भौगोलिक भ्रमण के माध्यम से हम सभी छात्र–छात्राएं एवं अतिथि व्याख्याता, भूगोल विभाग डॉ. तृप्ति राजपूत व डॉ. निगार अहमद (सहा.प्रा. अंग्रेजी) एवं अतिथि व्याख्याता श्री

थानसिंह साहू (सहा.प्रा. वाणिज्य), अतिथि व्याख्याता कु. नेहा कुंजाम (सहा.प्रा. सूक्ष्म विज्ञान) के मार्गदर्शन में रायपुर में स्थित **नंदनवन** भ्रमण करने एवं वन्य प्राणियों के संरक्षण के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ मिलीं।

नंदनवन आगमन से पहले बाहर में एक टिकिट काऊंटर है। जहां पर टिकिट लेकर हमें अंदर प्रवेश करना होता है। नंदनवन में टिकिट काऊंटर के पास उसके खुलने का समय निर्धारित किया गया है, जिसके अनुसार प्रातः 08:30 से 05:00 बजे तक ही हम इसका भ्रमण कर सकते हैं। प्रति व्यक्ति की दर से 20 रू. एवं बच्चे जिसमें 3 से 10 वर्ष तक 10 रू. निर्धारित किया गया है।

नंदनवन में प्रवेश करने के पश्चात् सबसे पहले नौका विहार एवं बच्चों के मनोरंजन के लिए बाल–उद्यान बनाया गया है और आगे बढ़ते ही वन्य–प्राणियों का संरक्षण गृह है। जिसमें विशेष रूप से भालू, हिमालयन काला भालू, चीतल, बाघ, सिंह, चीता, सियार, लकड़बघ्घा, बंदर, अजगर, चौसिंघा, कोटरी, तेंदुआ देखने को मिलेंगे। नंदनवन में पक्षी विहार भी है जिसमें हम अनेक प्रकार के पक्षियों से परिचित हुए, जिसमें मुख्य रूप से उल्लू, शुतुरमुर्ग, भारतीय मोर, बजरीगर, लेडी एम्हरेस्ट, ईमू, एक्लेक्टस तोता, कोकटेल, पोलिस हेन आदि अनेक पक्षियों की जानकारियाँ हमे भौगोलिक भ्रमण के माध्यम से प्राप्त हुई।

Scanned with CamScanner

उद्देश्यः–

हम सभी छात्र–छात्राओं का प्रमुख उद्देश्य नंदनवन भ्रमण के दौरान विभिन्न वन्य–प्राणियों एवं पक्षियों की संरक्षण के बारे में जानकारी प्राप्त करना था।

नंदनवन "पक्षी विहार" की झलक

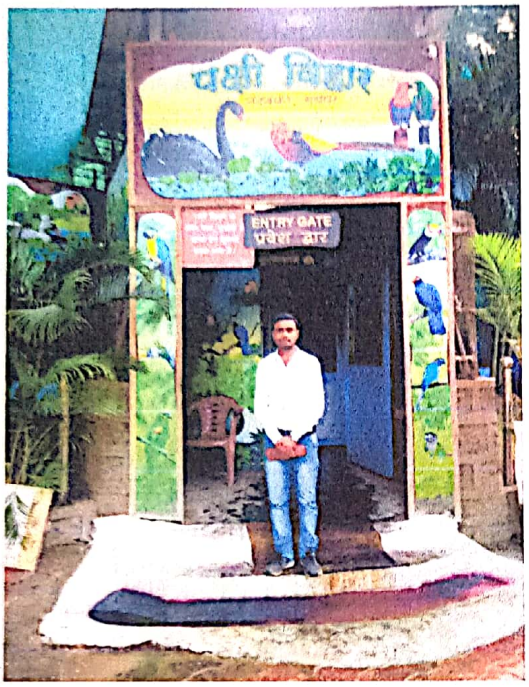

लेडी एम्हरेस्टः–

इसका वैज्ञानिक नाम **"काइसोलोफस एम्हरस्टिया"** है। यह मुख्यतः चीन व म्यांमार में पाया जाता है। इसका जीवन काल 6–10 वर्ष का होता है। इसकी विशेषता है कि यह शरीर पर संतरंगी पंख, पूंछ पर सफेद–काली धारियाँ लिए तथा ज्यादातर जमीन पर ही रहने वाले पक्षी हैं।

भारतीय मोरः–

मोर भारत का राष्ट्रीय पक्षी है। इसका वैज्ञानिक नाम **"पावो क्रिस्टेटस"** है। इसकी साइज 86–107 से.मी. (34–42 इंच) होती है। इसका वजन 2.7–6 कि.ग्रा. तक होता है। इसका जीवन काल 12–20 वर्ष का होता है। नरों के लंबे परों पर लंबी

Scanned with CamScanner

आलंकारिक कतारें होती हैं जो मादाओं में नहीं होती हैं। भारतीय मोर की खूबसूरत रंगदीप्त नीले–हरे रंग की पक्षी होती है। प्रदर्शन के दौरान कतारों द्वारा बनाया गया पंखा, शानदार होता है। दरअसल यह कतार, वास्तव में पूंछ नहीं होती है बल्कि वृहत दीर्घ ऊपरी पूंछ झाड़–झखाड़ होती है। पूंछ, भूरे रंग की होती है और मोरनी में छोटी होती है। अण्डे हल्के भूर रंग के होते हैं और हर दूसरे दिन–आम तौर पर दोपहर के समय दिए जाते हैं। नर, पालन–पोषण में सहायता नहीं करता है और छः मादाओं तक के साथ रह सकता है।

शुतुरमुर्गः–

यह मूल रूप से अफ्रीका के घने जंगलों में पाए जाते हैं। इसकी ऊँचाई लगभग 2.75 मी. तक होती है। इनका मुख्य भोजन घास–फूस, फल–फूल आदि हैं। इसकी मुख्य विशेषता यह है कि यह पक्षी प्रजाति की होने के बावजूद उड़ नहीं सकती। यह 70 कि. मी. की रफ्तार से दौड़ सकता है। इनके अण्डे आकार में 5–6 इंच के होते हैं, जो दुनिया में सबसे बड़े होते हैं। खतरे की आशंका पर यह गर्दन को जमीन पर झुका कर लेट जाता है, जिससे अहसास होता है कि सिर को दबा लिया है।

बजरीगरः–

ऑस्ट्रेलियन पक्षी बजरीगर पालतू पशुओं के तौर पर बहुत लोकप्रिय हैं। इन पक्षियों की नीले, सफेद, पीले, धूसर रंग और छोटी कलगियाँ वाली जैसी भी असंख्य उपजातियों को पिंजरे में रखकर प्रजनन कराया जाता है। नर पक्षियों में नीला मेदुर होता है जबकि मादा में भूरा मेदुर होता है। बजरीगर अन्य पक्षियों की आवाज की बहुत अच्छे से नकल कर सकते हैं। पर प्रसन्न, शांत और मिलनसार होते हैं। जबकि मादा प्रभुत्वशाली और सामाजिक रूप से असहिष्णु होती है।

Scanned with CamScanner

चीतलः–

यह भारत का सर्वाधिक पाया जाने वाला तथा दिखने वाला मृग है। इसका साइज 75–125 से.मी. होता है तथा वजन 60–65 कि.ग्रा. होता है। यह 70 कि.मी. प्रति घण्टे की रफ्कता है। इसका जीवनकाल 10–15 वर्ष होता है। यह देश का अकेला सघन चित्तीदार

हिरण है। इसका रंग भौगोलिक स्थिति के अनुसार परिवर्तित हो जाता है। दक्षिण भारत में यह लालिमा युक्त हो जाता है। मादा और नर दोनों सिंग और आकार को छोड़कर एक समान होते हैं। यह लंगूरों की ताक में रहता है तथा वृक्षों से उनके द्वारा गिराये गए फल और पत्तियों को खाता है। इसकी तीव्र "एक्क–एक्क" आवाज है तथा गहरी "वाउ" चेतावनी संकेतन ध्वनि है।

चौसिंगाः–

एक छोटा हल्के भूर रंग का एम्टीलोप चौसिंगा बचपन में लाल रंग का होता है, जो आयु के अनुसार पीले रंग में परिवर्तित हो जाता है। वह पिंकारा से थोड़ा गहरे रंग का होता है।

जिससे यह थोड़ा बहुत मिलता–जुलता है। नर के दो जोड़ी सिंग होते हैं, जिनकी अगली सिंग बहुत छोटी होती है। इसके सिंग कीलनुमा होते हैं तथा अन्य अधिकांश एंटीलोपों की तरह वल्याकार नहीं होते हैं। गहरे रंग की पट्टियाँ इसके प्रत्येक पैर तक जाती है। चौसिंगा का स्वरोच्चारण एक धीमी सीटी या काकड़ के भौंक के समान होता है। यह अक्सर पानी के समीप रहता है जिस पर वह बहुत अधिक निर्भर है। अन्य एन्टीलोपों से भिन्न वह अकेला, युगल में या छोटे दलों में दिखाई पड़ता है।

Scanned with CamScanner

सियारः–

नंदनवन में दिनांक 27–06–2011 को 15 दिन के शावक बच्चों को गोमची गाँव के खेत से लाया गया है। इसका नामकरण नर का राजेश एवं मादा का रश्मि रखा गया है। इन्हें प्रतिदिन 2 कि.ग्रा. बकरा माँस आहार दिया जाता है।

नंदनवन के समीप साँई मंदिरः–

नंदनवन से लगा हुआ एक साँई बाबा का मंदिर स्थापित है, जो सभी व्यक्तियों के आस्था का केन्द्र है। यह मंदिर देखने में बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहक प्रतीत होता है, क्योंकि मन्दिर के प्रवेश द्वार से लेकर मन्दिर परिसर में अनेक प्रकार की आकर्षक स्थलाकृतियाँ व प्राकृतिक सुन्दरता की झलक दिखाई देती है।

साँई बाबा के मंदिर में दर्शन करते हुए छात्र–छात्राएँ

Scanned with CamScanner

महत्वः–

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में स्थित नंदनवन वन्य–प्राणियों के संरक्षण के उद्देश्य से स्थापित किया गया है। साथ ही यहाँ पर पक्षी–विहार भी है, जिसमें तरह–तरह की पक्षियों को संरक्षित कर रखा गया है।

सीखः–

भौगोलिक भ्रमण नंदनवन में माध्यम से हम सभी भूगोल–विभाग के छात्र–छात्राओं ने वन्य–प्राणियों एवं पक्षियों को किस प्रकार संरक्षित करके बचाया जा सकता है, इसकी सीख प्राप्त हुई, ताकि भविष्य में इन वन्य–प्राणियों एवं पक्षियों की प्रजातियाँ विलुप्त न हो।

निष्कर्षः–

भौगोलिक भ्रमण के दौरान हमने नंदनवन में वन्य–प्राणियों एवं पक्षियों की जानकारी हुई, जिनके कारण पर्यावरण में संतुलन बना हुआ है। यहाँ पर भारत ही नहीं अपितु विदेशों की वन्य–प्राणियों की भी जानकारी प्राप्त हो जाती है। उनको किस प्रकार संरक्षित किया जाए, वन्य–प्राणियों का आहार, रहन–सहन, वजन, वैज्ञानिक नाम तथा उनको पूरी तरह से जानने का अवसर प्राप्त हुआ हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है हम नंदनवन जाकर अपने आस–पास के प्रायः सभी वन्य प्राणियों एवं पक्षियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

वन्य प्राणी राष्ट्र की धरोहर हैं

इनका सम्मान करें.....

––00––

Scanned with CamScanner